**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# बिहार की लोकतांत्रिक राजनीति में अशराफ बनाम पसमांदा मुसलमानों की राजनितिक प्रतिनिधित्व का मुद्दा

Research Scholar : Mojahedul Islam
University Department of Political Science,
B.R.A.Bihar University, Muzaffarpur

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष "काजी मुजाहिदुल इस्लाम कासमी" फरमाते हैं – परन्तु हमें इस सच्चाई की अनदेखी नहीं करनी चाहिए की सही अर्थों में जाति प्रथा के नहीं रहते हुए भी जाति जैसे पूर्वाग्रह का अस्तित्व हमारे अंदर है।

यदि हम 1901 की जनगणना रिपोर्ट पर नजर डालते हैं तो उस रिपोर्ट के अनुसार 133 जातियों की पहचान की गयी थी, जो पूरी तरह या आंशिक रूप से मुसलमान थे। रिपोर्ट के अनुसार भारत में मुस्लिम समाज मुख्य रूप से तीन भागों में विभक्त है।

अशराफ,अजलाफतथाअरजाल ।पहलेमेंकुलीनतथाउच्चपरिवारकेलोगआतेहैं ।इसमेंभीदोभागहैं ।पहलावेजोविदेशीमूल केहैं,मतलबजोअरब,पर्शिया,तुर्की अथवाअफगानिस्तानसेयहांआकर बसगयेहैं ।दूसरेवेसवर्णहिन्दू,जो धर्मबदलकरमुसलमानबनगये ।अजलाफमेंहिन्दुओंकीनीचीजातिसेधर्मपरिवर्तन कर मुसलमान बने लोगआते हैं ।मुसलमानों की तीसरी श्रेणी के बारे में 1901की जनगणनारिपोर्टकहतीहै–कुछस्थानोंपरतीसरावर्गभीहैजोअरजाल अथवानीचीजातियोंमेंभीसबसेनीचेआतेहैं ।इनमेंहलालखोर,लालबेगी,अबदाल,औरबेदियाआदिशामिलहैं।

बिहारमेंपिछड़ेऔरदलितमुसलमानोंकोलेकरराजनीतिकरवटलेरहीथी ।यहलड़ाईअगड़ेमुस्लिमसमुदायोंद्वाराकी जारहीहकमारीकेखिलाफकेन्द्रितथी ।शिक्षादीक्षामेंपीछेऔरहाशियेपरपड़ेदलितवसतायेहुएमुसलमानोंकेबारेमेंसुगबुगाहटें तेजहुईतोपसमांदाऔरपिछड़ेहुएमुसलमानोंकेसंगठनोंपरहीसवालउठनेशुरूहोगये ।पसमांदामुसलमानोंनेजबकहाकिउन्हेंराजनीतिकसंरक्षणकीजरूरतहै,तोकहाजानेलगा की यह मुसलमानों की एकता में फूट डालने कीकार्रवाई है।

बिहारमेंमुसलमानोंकाअशराफतबकाहीकुलमुस्लिमआबादीकाप्रतिनिधत्वकरतारहा है। सर्वाधिक आश्चर्यजनक बात यह है की मंडलवादी राजनीति के नेतृत्वकर्ता, पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रासाद यादव एवंवर्तमाननितीशकुमारकेविगत 30वर्षो के शासनकाल के सामाजिक न्याय के दौर में भी पिछड़े मुसलमानों को न्याय नहीं मिला है । नितीश कुमार कीकैबिनेट में भी दो मुसलमान मंत्री बनाये गए – प्रवीण अमानुल्लाह और शाहिद अली खान जो कि अगड़े जाति से आते हैं, अलबत्ता सन् 1983–1985 में के कांग्रस के शासनकाल में चंद्रशेखर सिंह के मुख्यमंत्री काल के दौरान पसमांदा मुसलमानों को अति पिछड़ों में शामिल किया गया था । यदि 1952–2000 तक के विधानसभा चुनाव के परिणामों को देखें तो कुल 275 मुसलमान

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उम्मीदवार विधानसभा चुनाव जीते, जिसमे 215 केवल अगड़े जाति के थे एवं वहीँ पिछड़े जाति से मात्र 58 मुसलमान विधानसभा चुनाव जीते, जबकि इनका कुल प्रतिशत 85 मानी जाती है, जो कि अपने आप में कहीं से न्यायोचित नहीं है स उसी प्रकार यदि 1952–2009 लोकसभा चुनाव के परिणामों पर नजर डालें तो कुल 54 मुसलमान लोकसभा पहुंचे थे, जिसमे पिछड़ों कि संख्या केवल 14 थी इससे साफ जाहिर होता है की अगड़े एवं पिछड़े मुसलामानों में हमेशा से ही गैर बराबरी रहा है जोकि कतई संतोषजनक नहीं है ।

शिक्षाकाक्षेत्रहोअथवाराजनीतियाजमीन,सभीमामलेमेंअशराफसमुदायहीआगेरहाहै ।पिछड़ेपसमांदामुस्लिमसमुदायया हिन्दूपिछड़ोंकेत्रिवेणीसंघकीतरहकोईसंगठनने कारगरपहलकदमी नहींकी।

अब्दुलकययूमअंसारीने40केदशकमेंमोमिनतहरीककेजरियेऐसीकोशिशकीथीजिसनेअपनीएकस्वतंत्रपहचान बनायी,परआजादीकेबादउसेएकसिलसिलानहींदियाजासका ।मोमिनराजनीतिकेझण्डाबरदारपार्टियोंऔरगुटोंमेंबंदकर राजनीतिकरतेरहे ।उपरसेदेखनेसेलगताहैकीमुसलमानोंमेंउंचनीचअथवागैरबराबरीकाभेदनहींहै,लेकिनवास्तविकताइ ससेअलगहै ।वहीं मुसलमानों की कुल आबादी का सवर्ण मुसलमान मात्र15फीसद हैं और दलित, पिछड़े और आदिवासी मुसलमान85फीसद होते हैं 1990के दशक में बिहार से डॉ. एजाजअलीके 'ऑलइण्डियाबैकवर्डमुस्लिम मोर्चा', अली अनवर के 'ऑलइण्डियापसमांदामुस्लिममहाज' औरमहाराष्ट्रसे शब्बीरअंसारीके 'ऑलइण्डियामुस्लिमओबीसीआर्गेनाईजेशन' एवंअलीअनवरकीकिताब"मसावातकीजंग"औरसाथहीमसूदआलमफलाहीकी"हिन्दुस्तानमेंजातपातऔरमुसलमान"जै सेपुस्तकों एवं संगठनों ने मुसलमानों के भीतर जाति विनाश के सामाजिक आंदोलनों को नयी गति दीहै ।वहीं कांशीराम ने मुस्लिम समाज के अपने अनुभव के बारे में एक बार कहा थारू 'मुसलमानों में मैंने नेतृत्व के स्तर से जाना ठीक समझा, उनके पचासों नेताओं से मैं मिला। इनमें भी ब्राह्मणवाद देखकर मैं दंग रह गया। इस्लाम तो बराबरी और अन्याय के खिलाफ लड़ना सिखाता है, लेकिन मुसलमानों का नेतृत्व शेख, सय्यद, मुगल, पठान यानि अपने को ऊंची जाती के मानने वाले लोगों के हाथ में है, वह यह नहीं चाहते कि अंसारी, धुनिया, कुरैशी उनकी बराबरी में आये....। मैंने फैसला किया की मुसलमानों में हिंदुओं की अनुसूचित जातियों से गए लोगों को ही तैयार किया जाए.' (सतनाम सिंह, कांशीराम की नेक कमाई जिसने सोती कौम जगाई, सम्यक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007, पेज. 132)

सच यह भी है की जातिगत भेद भाव के साथ शिक्षा और आर्थिक मामले में भी मुसलमानों का यहसमुदायहाशियेपरहै ।2001कीजनगणनाकेअनुसारमुसलमानोंमेंसाक्षरतादर42प्रतिशतहै ।महिलासाक्षरतादर31. 5प्रतिशतहै ।बहरहाल,एकजमानेमेंजनगणनामेंअपनानाममोमिनकेस्थानपरशेखमोमिनलिखवानेकासिलसिलाशुरूहुआथ ा ।हालकेवर्षोंमेंऊँचीजातिकेमुसलमानोंमेंमल्लिकऔरशेखसमुदायोंकेलोगोंनेअपनानामअतिपिछड़ोंमेंदर्जकरानेकेलिएआ वेदनदियाथा ।यहसबपरिस्थितियोंकीमारथी ।आरक्षणकेदायरेसेयेसमुदायबाहरथे ।उन्हेंलगाकिऐसाकरनेसेआरक्षणकाफ ायदामिलसकताहै ।दलितऔरपिछड़ेमुसलमानोंनेइसबातकोजबजानातोउसकाजमकरविरोधकिया ।पिछड़ावर्ग आयोगनेभीइनआवेदनोंकोरद्दकरदिया ।यहतथ्यभीप्रकाशमेंआयाकिअगड़ेमुसलमानपिछड़ेवर्गोंकाप्रमाणपत्रलेकरनौकरि योंमेंजाबैठेहैं ।यहांउन्हेंपिछड़ाकहलानेमेंकोईसंकोचनहींथा ।यहीवहदौरथाजबदलितऔरपिछड़ेमुसलमानोंपरकामशुरूहु आथा ।बैकवर्डमुस्लिममोर्चानामक
एकसंगठनसक्रियथा ।नब्बेकेदशकमेंउभरेमंडलआंदोलनकाअसरपिछड़ेमुसलमानोंपरथा,यहसंगठनउसीको

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लेकरचलरहा था।लेकिनइससंगठनने फर्जीप्रमाणपत्रकेजरियेनौकरियोंमेंघुसपैठऔर ऊँचीजातियोंकेपिछड़ेवर्गोंमें शामिल होने पर मौन धारण करलियाथा।

दलितमुसलमानोंकेबारेमेंनयेचिंतनकीशुरूआतहुई।उपेक्षितजनसमुदायोंकेबारेमेंनयीसोचविकसितहुईऔरए कनयेसंगठनपसमांदामुस्लिमसमाजकाजन्महुआ।25अक्टूबर1998कोयहसंगठनअस्तित्वमेंआया।इसनेअतिपिछड़ेहिन्दुओंकोभीसाथलेकर13दिसम्बरकोउसीसालआरक्षणबचाओरैलीकी।एकअध्ययनके क्रमकाविस्तारजनसंगठनकेरूपमेंहोजानाअपनेआपमेंनयीबातहै।मुस्लिमधोबी,नटबक्खो,पंवरिया,हलालखोर,भठियारा ,गदहेड़ी,लालबेगी,पासी,डफाली,नालबंदआदिमुस्लिमपेशेवरजातियांहिन्दूदलितोंकीतरहहीहै,लेकिनउन्हेंहिन्दूदलितों कीतरहसुविधानहींमिलती।पसमांदामुस्लिमसमाज
नेइनउपेक्षितमुस्लिमआबादीकोअपनाएजेंडाबनाया।इसमेंशककीकोईगुंजाईशनहींकिहिन्दूजाति समुदायोंकीश्रेणियोंकीतरहमुस्लिमसमुदायोंमेंश्रेणियाँविकसितहुईहैं,लेकिनउनकासशक्तीकरणनहींहोसकाहै।राजनीति तसे लेकर सरकारी नौकरियोंऔर शिक्षादीक्षामेंअगड़ेसमुदायों काएकाधिकार है। मानाजासकताहैकिराजनीतिमेंमुसलमानोंकीमध्यजातिसमुदायोंकाकुछअसरदिखाईपड़ताहै।हिन्दूअतिपिछड़ीजातिस मुदायोंकीतरहमोमिनोंमेंकुछराजनैतिकप्रतिनिधित्वदिखाईपड़तीहै।हिन्दूअतिपिछड़ीजातिसमुदायोंकीतरहमोमिनोंमेंभी कुछराजनैतिकप्रतिनिधित्वदिखाईपड़तीहै,लेकिनउससेनीचेकेदलितहाशियेसेबाहरनजरआतेहैं।राजनीतिमेंइक्केदुक्के अंसारी,कुंजड़ा,मुकेरी,कुल्हैया,शेरशाहाबादीनेतादिखाईपड़सकतेहैं,लेकिनउनसमुदायोंकाप्रतिनिधित्वनहींके बराबर हीहै।पिछलेलोकसभाचुनाव में सामाजिक न्यायकी पार्टियों मेंमुस्लिमसमाजसेजीतनेवालेनेताओंकीसंख्याछहसेतीनहोगयी।कहाजाताहैकीयहमुसलमानोंकीनयीराजनीतिकेहीका रणहुआ।

**निष्कर्ष**– बिहार में मूस्लिमों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और राजनीतिक प्रतिनिधित्त्वकीदशाबहुतहीदयनीय रहीहै । मुस्लिमवर्तमान बिहार की आबादी का 16–87 प्रतिशतहै(सन 2011का आंकड़ा)।अविभाजितबिहारकिजनसंख्यामें ये 12–5 प्रतिशतथे।मुस्लिमराज्य केसबसेगरीबतबकोंमेंसे एकहै।मुस्लिमआबादी 87प्रतिशतगावोंमेंरहतीहै।अधिकांशमुस्लिमपरिवार खेतिहर–मजदूरके रूप में काम करके अपनी जीविका चलाते हैं। सही मायने में बिहार में मुस्लिमों का सामाजिक स्तर पर शोषण होता रहा है। विभिन्न दलों द्वारा साम्प्रदायिकताकाहौव्वा खड़ाकरइनकेवोटबैंककाइस्तेमालअपनीसत्ताकोमजबूतकरनेकेलिए करतेआयेहैं।मुस्लिमोंकेसामाजिक आर्थिक कल्याण के लिए बहुत ही कम कदम उठाये गए। मुस्लिमों को समुचित राजनीतिक प्रतिनिधित्वभीनहींमिला।मुस्लिमोंकेसाथहुए सामाजिकअन्याय केदोस्तरहैं दृ पहलामुस्लिमोंकोउनकीजनसंख्याकेहिसाबसेबहुतहीकमराजनीतिकप्रतिनिधित्वमिला।राजनीतिकप्रतिनिधित्व कि भांति ही जीवन के दुसरे क्षेत्रों में भी उन्हें कम प्रतिनिधित्वमिलाऔर येपिछड़ेहुए समूहबनेरहे।दूसरा–मुस्लिमोंकोजोभीथोडाबहुतराजनीतिकप्रतिनिधित्वमिला,
उसपरऊंचीमुस्लिम(याअशराफ)नेकब्जाजमालियाऔरपिछड़ीमुस्लिमजातियों(याअजलाफ)कोबहुतकमप्रतिनिधित्वमि ला।जबकिइनकीआबादी 85प्रतिशततकमानीजातिहै।राजनीतिक क्षेत्र कीतरहहीआर्थिक रूपसेमजबूतहोनेकेकारणऊंचीमुस्लिमजातियोंकोहीजीवनकेदुसरे क्षेत्र अर्थातशिक्षा, नौकरीआदिमेंभीफायदामिला।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सर्वाधिक आश्चर्यजनक बात यह है की मंडलवादी राजनीति के नेतृत्वकर्ता, पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रासाद यादव एवं वर्तमान नितीश कुमार के विगत 30 वर्षो के शासनकाल के सामाजिक न्याय के दौर में भी पिछड़े मुसलमानों को न्याय नहीं मिला है । नितीश कुमार की कैबिनेट में भी दो मुसलमान मंत्री बनाये गए –प्रवीण अमानुल्लाह और शाहिद अली खान जोकि अगड़े जाति से आते हैं, अलबत्ता सन् 1983–1985 में के कांग्रस के शासनकाल में चंद्रशेखर सिंह के मुख्यमंत्री काल के दौरान पसमांदा मुसलमानों को अति पिछड़ों में शामिल किया गया था । यदि 1952–2000 तक के विधानसभा चुनाव के परिणामों को देखें तो कुल 275 मुसलमान उम्मीदवार विधानसभा चुनाव जीते, जिसमे 215 केवल अगड़े जाति के थे एवं वहीँ पिछड़े जाति से मात्र 58 मुसलमान विधानसभा चुनाव जीते, जबकि इनका कुल प्रतिशत 85 मानी जाती है, जो कि अपने आप में कहीं से न्यायोचित नहीं है स उसी प्रकार यदि 1952–2009 लोकसभा चुनाव के परिणामों पर नजर डालें तो कुल 54 मुसलमान लोकसभा पहुंचे थे, जिसमे पिछड़ों कि संख्या केवल 14 थी इससे साफ जाहिर होता है की अगड़े एवं पिछड़े मुसलामानों में हमेशा से ही गैर बराबरी रहा है जोकि कतई संतोषजनक नहीं है ।

भारतीय लोकतंत्र में पसमांदा मुसलमानों के प्रतिनिधित्व का सवाल अब सतह पर है, यदि लोकतंत्र को पूरी आबादी तक ले जाना है तो ऐसे गैरबराबरी को नजरअंदाज नहीं करना होगा ।

## संदर्भग्रंथसूची

1. प्रसाद, अनिरुद्ध, *सामाजिकन्यायएवंराजनीतिकसंतुलन*,रावतपब्लिकेशन, जयपुर2002.
2. सिंह, आर० जी०,*भारतमेंसामाजिकपरिवर्तनएवंसामाजिकसमस्याएं*,हिन्दीग्रंथअकादमी, मध्य प्रदेश,भोपाल– 1987.
3. सिन्हा,एस०पी०,*प्रोस्पेक्टिव आनसोशलजस्टिस*,कैपिटल,दिल्ली– 1991.
4. अली,अनवर,मसावात की जंग, पसेमंजर रू बिहार के पसमांदा मुसलमान. वाणी प्रकाशन, 2016
5. अहमद,डॉसज्जाद,*तहरीकआलइंडियामोमिनक ॉ न्फ्र ` ंस तारीखकेआईनेमें*,रांची,झारखण्ड।
6. अहमद, इम्तियाज, कास्ट एंड सोशल स्ट्रेटीफीकेशन एमाँग मुस्लिम, मनोहर पब्लिकेशन, दिल्ली (सं.)1973
7. चौधरी,प्रसन्न कुमार और श्रीकांत,*" बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम (1912–1990)"*,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली.
8. नायक.*आनइक्वैलिटीएवंडिस्ट्रिक्यूटिवजस्टिस*,इकोनॉमिकएण्डपोलिटिकल वीकली,नवम्बर–दिसम्बर 26,(11–12).
9. प्रसाद, ईश्वर, *रिजर्वेशन एक्शन फॉर सोशल इक्वालिटी*,विकास,दिल्ली,1992.